

DPN 5516

१. नवरात्र दुर्गा पूजा पद्धति

Title : 2. चतुर्थी विधि

MAVARĀTRA DURSA PUJA PADDHATI
CATURTHI VIDHI

Run. No. 6207

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Ritual*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

8
Nava direction, Hymns & mantras
in Sanskrit

Size in cms. 15.5 x 9

Folios 18

Lines (in a page) 8

✓
Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor श्री लक्ष्मी लक्ष्मीधरा

Date: NS / SS / VS / KS 990 / 1927

Ruler / place महुवादे Madu Sāchen

Script : New. / Dev. / Bhu.j. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

presented to Rudaman Surupya and
Gaurinarayan Surupya of
Yakakha Tole, Kathmandu.

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

श्री ॥ सादरीये नवाच दुर्गा प्रजा पधति समाप्तं शुभम् ॥
संवत् १९० विक्रम १९२७ साल ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा, भौमको ... अद्वैत भट्टा गेल्या
श्री ॥ हनुमान सुहृद् श्री गौरीनाथानां सुहृद् श्री गणेशाय नमः ॥

0 cm.

5

10

15

20

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25



157
Navaratri
Widhi

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

पुको माने

सैं हीं श्री कृ सो

महनिछो पूरु पीप

157
Navaratri
Widw.

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25



ॐ नमः श्री सैष्टदेवताये ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 अथ सरस्वती पूजा विधि लिख्यते ॥ हार्त देहो
 रो घटस्थापन ॥ बालायथकी अष्टपत्रचोय ॥
 बहूपलेलुं यलेतय ॥ कलशसतीर्थनलयचरन
 वीविहयचषहोवसाउठसर्वोषधीतय ॥ ह्याऽथ
 प्रणतोयय ॥ ईकायल्लारागाले ॥ ऊं हूँ अष्टा

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25



पकट्॥ मतविय॥ वेलाजुयकलशायादयः॥
 धनहीषकिगोकाय॥ अथादि॥ वाक्यगोत्रात्मन्
 श्रीवसरकालीनिदुर्गायुजाकलेशस्थाननिमित्तार्थ
 कर्तुं श्रीसूर्याय अर्घ्यनमः॥ ॥ गुरुनमस्कारव्यास
 मन्त्रोशोधन॥ लंबनराय॥ क्रः अष्टायकट्॥ मू
 तमज्जनजयेधो॥ षडङ्गेरायुजा॥ धेनुसुडा॥
 धनश्रीसम्यन्तावीनावतकोहोले॥ गलावियावै



धरणायसुद्वजहायनमः॥ ॥ धरोतकोहोले॥ ध
 र्कनभयुजा॥ आचमन॥ सूर्याद्यावाक्य॥ हवाय
 ध्ये॥ अखण्डमण्डलादिभूतधुद्रिआत्मपूजाविद्याय
 नवलाह॥ नकलरादियोग्य॥ ॥ अर्द्धमेदुर्गेरक्ष
 णीयस्वाहाअष्टायकट्॥ ४॥ पूजा॥ अं आधारादिअ
 ध्वपुष्टिकासनायनमः॥ ध्यानम्॥ सुद्वस्फटिकर्षका
 सन्निरोत्रचतुर्भौलिकी॥ वरदाभयहर्षायनमः॥ माला
 धरहरै॥ सर्वव्यात्ममहादेवईश्वरार्थसुद्वये॥

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25



ध्यानपुष्पीनमः
 श्रीसौख्यं
 जयहृको
 आवाहना
 नपतोवा महि
 सुरमालिनी ॥
 देवीनमोनमते ॥
 विशेषनप्रतिप



धियाभिरा ॥ देवी
 कर्मा संपूर्णकलाशा
 ननु यामिनमः ॥
 धेनुमुदा ॥ धूपदीप
 धिमाहामयेचा मुरेड
 नारोपविडा यदीहे
 इतिकलशाप्रजा ॥
 रायाप्रजा ॥ नमः



राधाभिरा यणीयजा
 ध्यान ॥ रक्तवर्णचर्तु
 रणी ॥ शरिखरवङ्ककपा
 धारिणी ॥ हंसासन
 एवंध्यात्वा महो देवी
 ध्यानपुष्पीनमः ॥
 सौख्यं अं ओरुचरा
 सीनाङ्ग महाभैरवा



हंसासनाय धादुकी
 धादुजिना मुकुटधारि
 रं चक्रवर्त्तिलखदाङ्ग
 गता देवी सुरवाहिना
 शत्रुक्षयनिवाहिनी
 धियाभिरा ॥ देवी
 धेनुमुदा ॥ धूपदीप
 धिमाहामयेचा मुरेड
 नारोपविडा यदीहे
 इतिकलशाप्रजा ॥
 रायाप्रजा ॥ नमः



15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

नमः॥ ३ ॥ वलिं च २ स्थाहा ॥ आवाहनादि ॥ धनपद्ममाल
 कोजायाया ॥ थाकमहावलिं च ॥ धनपद्ममाल
 रत्नदेव्यं गंधार्थं सुमनीहरी ॥ आद्येयं सर्वदेवार्थं धनो
 यं प्रतिगृह्यतीति ॥ मत्त ॥ सुप्रकाशो महातेजः सर्वत्र तिष्ठ
 मिरापहो स्वायाभ्युदयोति दीपो यं प्रतिगृह्यतीति ॥
 देव्यं आगच्छ ॥ अन्नं महारसं दीप्यं रत्नैश्च समन्वि
 तं ॥ मयानिवोदितं भक्त्या फलं लयं मे सुखरी ॥ तं
 य ॥ सर्वरसमहादेवी त्रितामसि श्रेष्ठे हृत्कं ॥ सर्वतीर्थ

मयी देवी वाहणी प्रतिगृह्यतीति ॥ धनतिलाफलमभिष्ट
 नं ॥ य ॥ लक्ष्म्या ॥ इदं फलपुष्पातान्मूलधूपदीपाश्च त
 दिधौ नत्तर्था विधिपरिष्कारं मत्त ॥ ॥ जयमालकोजाया
 यो नमालकोजाया ॥ हस्तपुष्पाविमानस्थे कुमारी त्वय
 धारिणी ॥ कौशभक्ष्मरी देवी नारायणी नमस्ते ते ॥ अत्र
 गंधादिपुष्पं नमः ॥ तवैरा ॥ विधिश्चैव पुजाधुनक
 र्वादिनां स्वानविद्यसकलयातं ॥ आत्मतवैरादिभ्यो
 जगोऽस्ति प्रतिपदायां न कलास्त्वेविधिः ॥ अथ

वीने

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

हिंति या यी प्र

एव कासना यनमः
वा कुं पीतकोमलवा
विशजठामकुतधा
श्वेव खड्गगंधारा
हादेवी शंखसामर्थ
मः ॥ **प्रियांजलि**
लेखरी देवो हरभरे



माहादेवरी पूजा
ध्यान ॥ नीलवर्णचतु
सिनः ॥ वारुणाश्च द
हिली ॥ त्रिशूलमस्त
पत्रक ॥ एवं ध्यात्वा म
सिद्धये ॥ ध्यानपुष्पन
३ ॥ ईशं प्रचरायै मा
वायपादुकीपू ॥ ॥

वलि ॥ आवाहनादि ॥ मालकी पूजायै ॥ जय ॥ लोच ॥

त्रिशूलचक्रादिधरे
माहेवरीधरवेरा
अत्रगंधादि ॥ तय
अथ नृति या न
हंससुरासनायन
सुरासनगादेवीव
खड्गकपालाव



महावृषभधारिणी
नारयणी नमस्ततो
रा ॥ इति हिंति या ॥ ॥
ये को मारी पूजा ॥ ॥
मः ॥ ध्यानम् ॥ म
सुदाकुत्रिलोचनी ॥ श्री
मलतर्जनीकामुर्क

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

शरश्चाभयदेविमहिषारसदीनी॥ सर्वध्याता महादेवी
 सर्वसौभाग्यदायिनी॥ ध्यानपुष्पं ॥ ॥ त्रियाश्रु
 ॐ हूं चराग्राये कोमारी देव्यै नमः ॥ महाभैरवाय वा
 पू० ॥ ॥ धलि ॥ आवाहनादि ॥ ॥ पाशादिध्वजदीप
 नैव ॥ जयसोत्र ॥ मयूरकुक्कुटचूने महाशक्तिधरेन
 च ॥ कोमारीरूपस्थाने नारायणीनमस्तुते ॥ ॥ अत्र
 गंधादि ॥ तर्पणा ॥ ॥ शक्तिरूपीया पूजा ॥ ॥ अत्र
 श्रीचराग्राये विनायिकायै नमः ॥ ॥ अंगहस्ता

थच २

सनायनमः ॥ ध्या
 त्विनादेविने देवा
 षचक्राभयवर
 शरणा ॥ सर्वध्याता
 सुविनाशिनी ॥
 त्रियाश्रु ॥ ३०
 काये वैष्णवी देवी
 ॐ ॥ धलि ॥ आ



नमः ॥ गरुडोय
 कृत्रिलोचन ॥ श्री
 सुयर्गास्मि गते
 महादेवी लोक न
 ध्यानपुष्पं नमः ॥
 ॐ हूं चराग्राये
 मोक्षभैरवाय वा
 वाहनादिध्वजदीप



15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

वराहसिंहाशि
क्तम् ॥ अत्रगंधा
मसा ॥ ॥ शिवाय
नमः ॥ गजासनाय नमः
स्थिता देवी मतो
जशक्तिश्च दण्ड
वी ॥ गदकुशाया



विनायकाय नमः ॥ त
दिपुष्पनमः ॥ त
राहीपूजा ॥ अ
ने इन्द्राणी पूजा
ध्याना ॥ गजोपदि
वा कुत्रिलोचना ॥ व
चरवकुकेटककाम
शच अभयचव

रत्नथा ॥ शरतर्जनी भूली चयलत्पाक वलोचना ॥ रघु
ध्यात्वा महादेवी सर्वकामार्थलिङ्गये ॥ ध्यानपुष्पनमः ॥
त्रियाभूति ॥ ॥ ऐं ऐं ऐं चण्ड वरेण्ड इन्द्राणी देव्ये कपा
लीलभेरवाय या ॥ ३ ॥ वलिङ्ग २ त्वाहा ॥ आवाहना
दि ॥ धामादि धूपदीप नैवम ॥ जया ॥ लोभा ॥ की
टिनि म हावजे ॥ सहस्र नयनो ज्वले ॥ वतापुला
हरचैव नारायणी नमो कृतम् ॥ अत्रगंधादि ॥ तपसा
शिव इन्द्राणी पूजा ॥ ॥ अथ सप्तम्यधिराउत्पाया ॥

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

ॐ
प्रजापतिनास

प्रजापतिनासनास
लोचनातिथिवाङ्म
भरणाभूतितीक्ष्ण
मक्षमालाधरं तथा
यगदयराधारि
लचपायत्रभ
दिमहादेवीशोवि
ध्यायेते परमादृ
भवन् ॥ ध्यानपुष्पनमः ॥



॥ त्रियाक्ष लि ॥ ३ ॥

नाथनमः ॥ ध्यान
दीपचवलीति
महादेवीसर्वा
नखदोक्तभय
केनककामवृक्ष
लीशारकासुकश
यतथा ॥ ध्यान
नाथरत्नदरी ॥
वीसर्वलोकवली

ओं औं चण्डहवाये चामुण्डादेव्ये श्रीवराभैरवाय पा. पू
धाली गृहस्थाहा ॥ आवाहनादि ॥ पाशादि धुयद
यनेव यजयता ॥ दंडाकरेलवदेसिरेमाला विभूषि
ते ॥ चामुण्डा मुण्ड मथने नाहयणी नमोस्तुते ॥ अत्र
धादि ॥ तर्वरी ॥ इति चामुण्डा पूजा ॥ अथाष्टमा
अति चण्डिका महालक्ष्मी पूजा ॥ तिहासनायनमः
ध्यानम ॥ तिहायारिस्थिता देवी कलावाङ्मिलोचना ॥
राष्ट्रक कर्चवचामरमभयमेवच ॥ कामुकवरदा

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

कहिं फेट
उमरनाग
पार्थिव
कामनाय
महिनी ॥ मु
धारोदीया
चना ॥ एवं
वीमिहि
रणी ॥



अतथाकुश
पाश्र्वियान
था ॥ विदुमु
महिकल
रुड मालात
राविकललो
ध्यात्वा महादे
ताय प्रदोष
ध्यानपुष्पिन

मः ॥ ॥ विद्या ॥ ॥ ॥ ऐं अं अः अति बलि काये महाल
क्ष्मी देवी स्तुतार महा भैरवा य पादुकां कुरु ॥ यति ॥ ॥ आ
वाहनादि पुष्प ॥ ॥ पायादि पूजा ॥ ॥ धूप दीप नैवेद्य ॥ ॥ जप ॥ ॥ स्तो
त्र ॥ ॥ लक्ष्मी लज्जे महा विष्णु ध्वजे पुष्पे स्वधे ध्रुवे महारात्री महा
विष्णो नारायणी नमस्तुते ॥ ॥ अर्चनीयादि ॥ तर्पणी ॥ ॥ इति
महा लक्ष्मी पूजा ॥ ॥ ध्यानो विष्णो पूजा ध्यान काव वली
ना देवी ध्यान काव महा कृष्ण पूजा याथा ॥ ॥ ॥
इति श्री नारायणी नमस्तुते पूजा विधि समाप्तं शुभम् ॥

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ अथ महा **पूजाविधिः** ॥ पतवा
 सनमालकोचोय॥ खड्गयातः तगं॥ त्रिवलियैचवलि
 मोहनी भूषकसिः कलशाः ज्वलाहर्कसिधुमुः कुम्भा
 स्थितिरुत्तरादिपार्तचोय॥ सिद्धरत्नायये॥ दृष्टिअडु
 धालयैचयनाः ॥ यतजगोमकाखेले॥ ॥ कुम्भधन
 भूषकयने॥ ॥ कुम्भधनः ॥ अखलीकलशान
 दकरैयरसुधात्मनि॥ स्वधृदवारिनादूरीनिधेही
 वृत्तमिरा॥ ॥ इन्द्रपूरयस्वाहा॥ ॥ यत्सत

यो॥ ॥ कलशायजा॥ स्नानादिचन्दनसिद्धरत्नात्मने
 पूजा॥ ॐ गंगाये नमः॥ ॐ जमुनाये नमः॥ ॐ गोदावरी
 नमः॥ ॐ सरस्वतीये नमः॥ ॐ कावेरी नमः॥ ॥ त्रिपुती
 स्ना॥ ॥ सिद्धराकलशायपाडुकीपूजयामिनमः॥ ३॥ ॥
 अस्तु॥ चमन॥ ॥ ॥ कल्प॥ अयोदि॥ वाक्य॥ गोत्राह्म
 त् श्रीस्यैष्टदेवतापीतिमहाहृमाहुभिष्यहुः स्वनिष्ट
 तिसुभिष्यदीपानुक्त्वपरमपदप्रामिधजनानाकुल
 विमानावरोहन्पूर्वकप्रलोकगमनपूर्वकसाध्य

15

10

5

0 cm.

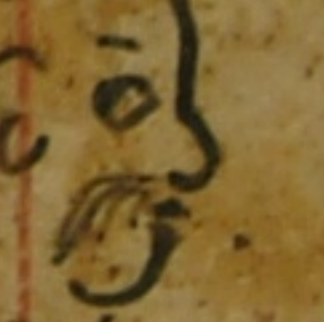
5

10

15

20

25



तममावधि ननु वदितुं यजमानो वा सोमो श्रीमान् श्रीत्ये
 ष्टदेवता प्रीतिं द्यौर्गो पूजामहं करिष्ये ॥ पूजामधि
 यानया ॥ जयत्री मङ्गल काली मङ्गल काली कया लीनी दुर्गा
 माशिवा धात्री स्वाहा स्वधाने मस्तुते ॥ आचमयेत् ॥ गुह
 नमस्कार ॥ ध्वजमूलनयासा ॥ ध्वजमूलनयासा ॥
 ना ॥ उर्गंगा शारित श्रेष्ठ नाना पाप प्रणासि ॥ दूतं कि
 या य पुता तिस्रानां धौ स धौ क्षता ॥ सा ५५ ॥ ययसा
 ययय पूरा च दृष्टि व्या पूत रीयत ॥ कामधनु रमानेत

स्नाययामि सिवाय ॥ धलि ॥ दधि उमा पति दिव देवा
 नी प्रीति वभ्रम ॥ धलि ॥ दधि उमा पति दिव देवा
 न्यते ॥ मधलि ॥ दधि उमा पति दिव देवा
 न्नकः ॥ अग्नि सूर्य चर वेरा भ्रातिलोक शिव प्रभ ॥
 कति ॥ गोमुखो शक्ति नो मुक्त देवा ना प्रिव ॥ धलि
 लित रस्मार जे स नाने न लभ्यते ॥ सा ५५ ॥ ययसा
 स्नापित देवी अस्व गिद न क ॥ दधि उमा पति दिव देवा
 न्यते ॥ मधलि ॥ दधि उमा पति दिव देवा

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

स्वकुललोया ॥ मिसलिसईकावकांगलातये ॥
 कुंफद्वहा ॥ चलपतिसकिगलवविशतया ॥ अ
 छासफद ॥ मततय ॥ कुंजोतिदश्यामि ॥ मतकताद
 चानत्याप ॥ कुंफद्व ॥ सगोवनत्याय सगूरातिके ॥
 सिकारति ॥ अकुशफद्व ॥ फलुयगा ॥ नायहोले
 श्रीसम्भतामिरालानो ॥ लखये ॥ स्वस्तिवाचनवोने ॥ स्व
 त्तिर्मगलमंगलपेसधे दिवसशागरा ॥ पृथिव्यापन
 गानागानेयाकुलिश्चलये ॥ स्वस्तिचक्षत्रयालाथ

गराधक्षगरोधरा ॥ स्वस्तिवृक्षाधसौलाया दिग्घाता
 योगिनीगरा ॥ सभाहरीतिथासुस्वस्तिदेवाधिदेवता
 ॥ ॥ देवयास्थानसकृद्यने ॥ ॥ धर्मलियकृत्सवीर
 नखाना ॥ सुरशक्तिशिवोमीस नत्तमिल्योममुतामी ॥ अ
 द्विसिद्धिपुंदुरापामलिहानंददाम्पही ॥ ॥ स्वकुलसि
 हवनतिकेछायये ॥ ॥ धतभाचमने ॥ लखकिगो
 कयासूर्याध्याय ॥ वाक्य ॥ अद्य गोत्रास्मत्प्रीत्येवदे
 वताप्रीतिमहाकुमीशारदीयदुर्गा पूजानिमित्तार्थक
 र्त्तुं श्रीसूर्यायार्धनमः ॥ पृथ्वीनमः ॥ ॥ देवताना ॥ उका

15

10

रवायुवीजतुपरियरमवजुय॥ लिताडुर्क॥ कालीवर्गात्ता
 पुर्तनडुपरियरमवहिवीजशहर्ष॥ इन्द्रविन्दुलयातीति
 नकमलधरक्षीरधारभयर्त॥ दृष्टाकूटनेपुर्तदुर्निक
 लमलमेरुगुह्यायी॥ **॥ अथ न ॥** श्रीखराडुचंदनपुति
 व्यंगिधायिमानोहर्ष॥ आभूजितललाटाक्षचंदनपुति
 गृधता॥ **॥ सिद्धरा ॥** दीर्घवरीमहावीरवीरभस्मविभू
 क्षिता॥ स्वर्गमध्येचपातालचण्डेशप्रदेशिनी॥ **॥ इति**
 दिव्यचक्षुफलान्तर्गृहारायरमेवरी॥ **॥ अथ**
॥ चानतया ॥ जमका॥ करणपतापचपता॥ करणधि
 त्वनमकाचपातालचण्डेशप्रदेशिनीतं

5

पुगलीदेवीपतकार्यचवर्गक॥ पंचसिद्धिफलान्तर्ग
 गृहारायरमेवरी॥ **॥ माला पुष्पा अडुवाला ॥** नानापु
 ष्यसुर्गधानिमालान्याकुसुमोदय॥ सौभाग्यसिद्धि
 दंभद्वेषुष्यारोहणसुतम॥ **॥ अथ पूजा ॥** गुरुनमः
॥ स्फार ॥ अखराडुमराडिपादि॥ **॥ अथ रत्ना ॥** नूलावा
॥ न्यास ॥ अं नृसुहरे अष्टाय फट् ॥ ४ ॥ क्रीराज्यपदे
 गृष्टाभ्यां नमः॥ **॥ अं क्रीं ह्रीं इ प्र च रे डी त र्ज नी भ्यां नमः**
॥ अं क्रीं रि पुर म दि नी म ध्य मा भ्यां नमः ॥ अं क्रीं ह्रीं क्रीं अ ना

0 cm.

5

10

15

20

25

15

10



मिकाभ्यां नमः ॥ ॐ श्रीं सदा रक्षक निष्ठाभ्यां नमः ॥
 ॐ श्रीं त्वीं मीं गुं सः मृत्पुहरे अष्टायकदा ॥ **दद्यादि**
 ॐ श्रीं राजप्रदेह दयाय नमः ॥ ॐ श्रीं स्फो रे उग्र चरडीशि
 रसेत्याहा ॥ ॐ श्रीं टिपु रमदिनी शिवा यवोषदा ॥ ॐ श्रीं
 केहं सदा रक्षक वचा यदा ॥ ॐ श्रीं त्वीं मीं गुं सः नेत्रत्र
 याम्यवोषदा ॥ ॐ श्रीं मृत्पुहरे अष्टायकदा ॥ **ध्वस्त**
लनजलघात्र स्वीरघात्र यदा ॥ ॥ गायत्री ॥ ॐ श्रीं ॐ
 यचराय विमहे रूर्गा देवी धीमही तन्नो चरडीप्र



5



बोदयान् ॥ **अर्घवात्र नैथवथ्ये ॥ ॥ भूतपुद्गिआ**
मयजा ॥ ॥ देवधिर्स्पथिरवाक्य ॥ ॥ ऐपहर्गोत्तव
 रमेशानी ॐ प्रहवी भर्ष करी ॥ जगन्मातुमिनाशाय भ
 चलसर्वा स्थिरो भवा ॥ स्थिरस्थापने स्थिरो भवा ॥
धनयानाओजो नो ॥ मालनीयो नो ॥ ॥ ऐभैरवोवा
 या ॥ जयत्वं मालनी देवीत्यादि ॥ **इदं आवाहयि**
व्ये आवाहयामि नमः ॥ ॥ प्राणप्रतिस्था ॥ धेनुयो
निमुद्रा ॥ ॥ पंचवलि विद्या ॥ ॥ मयूरसनागया



0 cm.

5

10

15

20

25

15

10



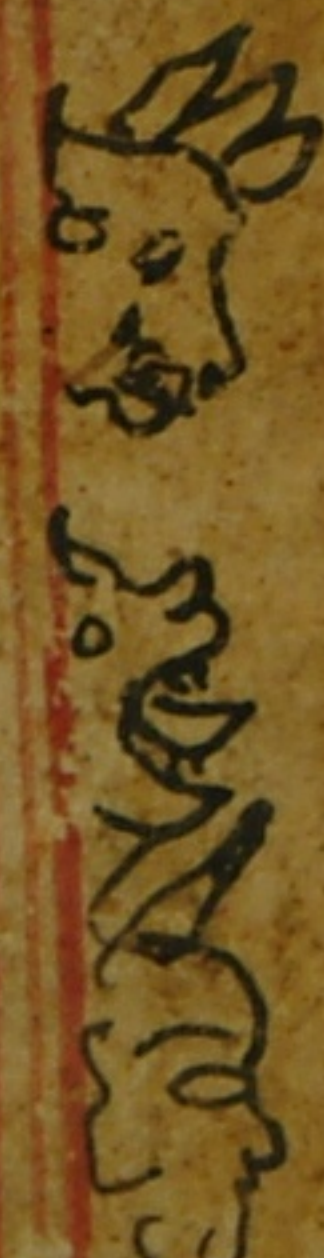
हुकीं ॥ ॐ नरासनाय पादुकीं ॥ विहासनाय पा
 हुकीं ॥ ॐ प्रेतासनाय पादुकीं ॥ ॐ मूलासनाय पा
 पादुकीं ॥ श्रीं श्रीं कुलपुत्रवदुकनाथाय पादुकीं ॥ ॐ
 ॥ वलि ॥ शांक्षयालाय पादुकीं ॥ वलि ॥ ॐ योगिनी
 भोगेय ॥ वलि ॥ ॐ सिद्धिचामुखाय पादुकीं ॥ वलि ॥
 गौरीकुलगरोधराय पादुकीं ॥ वलि ॥ ॐ आवाहना
 दि ॥ दद ॥ तर्जनी विन्दु ॥ योगिनी गजमुद्रादृश्येत् ॥ तय
 भय ॥ दीप ॥ जाय ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ श्रीं स्वाहा ॥ गौरी स्वा



5



हा ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ श्रीं स्वाहा ॥ ॐ श्रीं स्वाहा ॥ गौरी स्वा
 श्रीं कुमारगमरागरा ॥ सुतक्षत्रा योगिनीया ॥ तुरा
 चण्डरुयाहुरितभयहरीविद्युहारंगलोरी ॥ पुष्पाशाधूप
 दीपाविषमयरतनुरोर्विनाभूषिताङ्गि ॥ चक्रेश्वरका
 नीविबिधीहरमिताभुक्तिभुक्तिप्रदाता ॥ ॥ इति यम
 वलि ॥ ॥ तत्त्वशोधनदेवतार्थरा ॥ आत्मतत्त्व ॥
 तयरा ॥ ॐ पुनप्रेतासनस्थो भवो भयहरणो भेरवो
 मत्रभूति ॥ ॐ विन्दु ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ श्रीं स्वाहा ॥ गौरी स्वा



0 cm.

5

10

15

20

25

15

ॐ

ॐ

ॐ

पाताकनिद्रा॥ मक्षायक्षा सुतीर्था पितृगण सकलमा
 नराः क्षत्रपाला॥ योगिन्ययोग युक्ता जलचर रेचरा सु
 नमेतापि वरा॥ विवशु देवताः लवा ह्रस्व सगणा विधा
 : योगिन्य हस्त धालाश्च मम देहे व्यवस्थिता॥ वाक्य ॥ १ ॥
 अष्टाविंशति क्रमाधार अष्टाविंशति मण्डले वीरव
 क्रोस्थिता मन्दे अष्टाष्टक समवृत्ते नमस्तो चक्रवर्ती को
 नमस्तो शानदायक॥ नमस्तो भवत्पाय नमस्तो भवतार
 क॥ अष्टाष्टक योगिनीर्गावदुक्ता नीतये वरा॥ भैरव
 च इमं चक्र एकाकारं नमाम्यहं॥ वाक्य ॥ २ ॥ अविनाशो भ

ॐ

ॐ

ॐ

10

ॐ

ॐ

ॐ

वेदेहं अजरामर मे वरा॥ महावर्ल वज्रदेहो राजप्री मे क
 वत्र कम्॥ शत्रुनाशो ज्योतिर्द्विर्लक्ष्मी शानतिवर्द्धनी॥
 महागुष्टिर्भवेदेहं मायुषी काशिवर्द्धनी॥ रसायनी य
 स्य स्य देवदेव न निर्मिता॥ परा मूर्ति रस्य दिव्यी यती
 भवमेव जी॥ ननु कुल योगिन्यो नन्दन कुल पुत्रकाः॥
 नन्दन प्री कुलाचार्यः येदाये कुल हि क्षकाः॥ वाक्य ॥ ३ ॥
 नमस्तो नमस्तो॥ आचमन ॥ अक्षय्य च आवाहन
 वायादि पूजा॥ ॐ अ न न मण्डल आदि देव पादुकी

ॐ

ॐ

ॐ

0 cm.

5

10

15

20

25

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25



15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

पूजयामिनमः॥ वलि॥ **त्रिदेवपूजा॥** श्रीं श्रीं नाराय
 नायवाः पू॥ श्रीं श्रीं मन्मथनायवाः॥ श्रीं श्रीं मूढास
 नायवाः पू॥ श्रीं क्षत्रपालनायवाः॥ वलि॥ वावदुका
 यथा॥ वलि॥ श्रीं कुलगुरुनायवाः॥ वलि॥ आ
 वाहनादिपुष्पैः॥ **दरशः तर्जनी गजमुखादि**
रोता॥ तर्जनी॥ अथ मूलदेवीभगवती
रु॥ ॥ अं आधारादिपुष्टिकासनायवाः॥ अं श्रीं मही
 वासनाय॥ अं श्रीं लीलासनायवाः॥ अं श्रीं भुजासना
 यवाः॥ अं श्रीं त्रिभुजासनायवाः॥ **ध्यान**



ॐ श्रीं गुरुभ्यो नमः देवी ध्यायेद्गणपतीं वरदां ॥ नमः
 श्रीं करवर्णानां पुष्पयुगलोभितां ॥ दिव्यवस्त्र
 यरीधानो महा महिषासुरमर्दिनी ॥ किरणित्वीरणा
 कारैकेयुरैर्मणिकुण्डलैः ॥ स्वमालाविशिष्टा गहवा
 मालाविशोभिता ॥ अष्टादशभुजाक्रांता योनिव
 क्षुब्धकूर्मु ॥ सर्वाङ्गैर्लोकसुतातनुकोदितसम
 प्रभा ॥ स्वर्णशरीरं तथा च वज्रकुशधारिणी ॥
 वरदराजमहर्षिचभक्तवार्त्तलुप्तोभरी ॥ दक्षिणे

मन

15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25

नकरो येता यथाशोभा तथा यत्न केटकं धनुया री
 रगदाघराग सुशोभिता ॥ पार्श्वे तर्जनी हस्तं च रवद्वारं
 नागयाशकं ॥ विन्दुमुद्रा तथा लिङ्गि सिंहासनोपा
 स्थिता ॥ अधो हस्तौ महिषं च शिरसि शोभा सदा
 तद्गीतानिर्गता दैत्यमहो वलाघराक्रमं ॥ भेदे यन्त्रि
 त्रेभस्तेन विध्यतस्यापि रोहता ॥ एवं ध्यात्वा महा
 देवी सर्वकामफलप्रदा ॥ शेषोद्योदशहस्ता चर
 द्वांगदमहं विता ॥ रुद्रचरा प्रचरा च चरा गेया

चरा उतापि का ॥ चरा चरा वती चैव चरा रवा निच
 रिउका ॥ लोचना अरुणा कृष्णानीला धुक्ता श्वधूमि
 का ॥ पीताश्वपाण्डुराशेया ॥ आदिप्रस्था हरिस्थिता
 स्वपरिवारसंयुक्ता माया नामिह मण्डले ॥ ध्यानमु
 ध्येनमः ॥ ॥ नमो भगवते ॥ ॥ ५ श्रीं दुर्गे उग्रचरा ॥
 आगच्छ २ स्वाहा ॥ ॐ श्रीं नमः ॥ ॥ अथ दिव्या रूप
 गा ॥ श्रीं श्रीं इन्द्राय नमः ॥ श्रीं श्रीं अग्रे नमः ॥ ॐ श्रीं
 यमाय नमः ॥ ॐ श्रीं नेत्राय नमः ॥ ॐ श्रीं वरुणाय नमः ॥ ॐ श्रीं

बायवेश॥ ॐ श्रीं कुंवेराय॥ ॐ श्रीं ईशानाय॥ ॐ श्रीं
अननाय॥ ॐ श्रीं ब्रह्मणे॥ अथ यथादि॥ ऐं श्रीं
जयाय नमः॥ ऐं श्रीं विजेयाय॥ ऐं श्रीं अजिताय॥
ऐं श्रीं अपराजिताय॥ ऐं श्रीं जयसे॥ ऐं श्रीं सजयसे
॥ ऐं श्रीं मोहिसे पादुकी॥ ऐं श्रीं आकर्षणी॥ ॥
अथ रुद्रचरादि॥ ॥ ऐं ओं औं रुद्रचराय वृद्धा
एषेया॥ कलि॥ ऐं श्रीं ईं ईं प्रचरा माहेश्वरीया॥
ऐं श्रीं ऊं ऊं चरायाय कीमार्थेया॥ ऐं श्रीं अं अं चरा

नायिकाय वैष्णवेया॥ ऐं श्रीं हूं हूं चरायैवारायेया
॥ ऐं श्रीं हूं हूं चरायैवारायेया॥ ऐं श्रीं ओं ओं चरा
रुद्राय चामुण्डायैया॥ ऐं श्रीं अं अं अतिचण्डिकाये
महालक्ष्म्यैया दुर्गाय॥ सप्तविंशति॥ अतो चतुःपी
ठद्वया॥ ॥ गं गं किंयेया दुर्गा॥ रं रं किंयेया॥ लां
ला किंयेया॥ कां का किंयेया॥ सां सा किंयेया॥ हूं हूं
किंयेया॥ ऐं श्रीं ओदि यानपीठाय पादुकी॥ ऐं श्रीं
जालंधरपीठाय पा॥ ऐं श्रीं पूर्णगिरिपीठाय पा॥

हैं कीं काम हवी ठाय पाडुकी पू॥ लपति बालि ॥

त्रिया अलि ॥ स्त्रिया आनन्द शक्ति भैरवानन्द वीर धिप
नये स्त्रिया डिंगा वीर रागाय पाडुकी पूजया मिनम
बालि ॥ मूल मंत्र रात्रिया अलि ॥ अं कीं राजप

दे सेवो गुरु रिपु मर्दिनी कैं के सदारक्ष २ त्वीमी
जुसः मृगहरे पाडुकी पू॥ सद के राक्षसा ॥ गाय
त्री ॥ हें उग्र चरण देवी विमले दुर्गा देवी धी महीत नो
ः चण्डी मजोदपात ॥ कीं दुर्गे २ रक्षणी च स्वाहा पा

डुकी पू॥ बालि ॥ आवाहनादि ॥ योनि मुद्रा ॥ त
र्यरा ॥ उति भगवती पूजा ॥ अथ स्रष्टु पूजा ॥ आधा
राय स्रष्टु काल नायपा ॥ त्रिया अलि ॥ हें महाका
लाय स्रष्टु शत्रु मर्दिनाय पाडुकी पू॥ ३ ॥ अं कीं राजप
दे सेवो रिपु मर्दिनी कैं के सदारक्ष २ त्वीमी जुसः मृग
हरे पाडुकी पू॥ बालि ॥ कलश पूजा ॥ आधाराय
स्रष्टु काल नायपाडुकी ॥ अं स्त्रिया आनन्द शक्ति भैरवानन्द
वीराधिपत के स्त्रिया मजोदपात ॥ राकल शाय पाडुकी पू

॥ **द्वितीयः** ॥ अमृतं वरभक्तारकाय पादुकी वलि
 आवाहनादि ॥ **धेनुमुद्रा** ॥ ॥ **कुम्भायुजा** ॥ आधारशुद्ध
 उष्टिकासनाय पादुकी ॥ **अष्टकीं** ॥ कुलकुम्भभ
 हारिकायै श्री पादुकी ॥ **हृत्पुष्पाया** ॥ यष्टमानुके
 भोपादु ॥ असीताकादि अष्टभेदे ये ॥ पादु ॥ **सर्दगा**
 वालि ॥ आवाहनादि ॥ **योनिमुद्रा** ॥ **तर्पणा** ॥ ॥ **चतुर्भुजा**
अष्टका ॥ ॥ **सुप्रमहाभाया** ॥ अष्टके त्रिविधा च **विशेषा**
 ॥ ॥ ३३ं कीं अष्टादशैकीं हंसः आत्मतत्वाधिपतये प्रिया श

क्रियानिर्वारा सुन्दरी देवी पादुकी पू० ॥ **वालि** ॥ **अष्ट**
वाक ॥ ॥ **हृत्पुष्प** ॥ यष्टमद्योरेष्टे चोत्तमुरवी श्रीमभीमभीष्ट
 वमश्चिवश्चरुहृत्पुष्पकोटीं कृष्णश्रीकृष्णविशाल
 त्वाधिपतये शान्तशक्ति यरानिर्वारा काली देवी श्रीपादु
 कोली ॥ ॥ **कै** ॥ ॥ **सुप्रमहाभाया** ॥ त्वाधिपतये इष्टा शक्ति अप
 रापनिर्वारा चतुर्भुजा देव्यै श्रीपादु ॥ **वालि** ॥ आवाहनादि
 धेनु योनि मुद्रा ॥ ॥ **कलियुजा** ॥ ॥ **हृत्पुष्पा** ॥ यष्टमानुके
 श्रीपादुकाय पादुकी ॥ **वालि** ॥ ॥ **सर्गोपायुजा** ॥ ॥ **हृत्पुष्प** ॥ अष्ट

15

10

प्रकोशो महातेजः सर्ववृत्तिमिह यही ॥ सवाद्याभ्युदयो
 निदीपो यः प्रतिगुप्यतां ॥ **॥ नैवेद्य ॥** अनीमहारस्य दिव्य
 त्वैषाद्विस्मयवर्तमानातिदेदिर्न भक्त्या गृह्यमाणं
 मेवार्ति ॥ **॥ विदुषा ॥** सर्वरसमहादेवी त्रिकामाणि
 अहेतुकी ॥ सर्वगीर्ध्रमयी देवी वारुणी प्रतियुग्यतां
 योयातको द्वाया ॥ **॥ लक्ष्मिगीर्ध्रमयी देवी ॥** इह
 लपुष्यताम्बूलनानोपचारनेव शादिसंस्काराणि
 त्तु ॥ **॥ पञ्चांग ॥** जलद्वारा ॥ अमृतपिधानमसि
 त्वाहा ॥ **॥ धर्ममालको जपयाप ॥ मूला ॥** स्त्रियाहा

5

५०८ धा ॥ **॥ लोत्र ॥** अत्यरुमरालोत्पादि ॥ श्रीलक्ष्मी
 यादेवी मधुकेटभप्रमथनीया वरुणमुखादिनी ॥ या
 माशामहिवारक्षयकरी पारक्तवीजायता ॥ या साधु
 त्रिभिर्देवदहनीया देवदेवा किनी ॥ या देवी म
 रक्षदक्षिणभुजे चण्डी जयोरक्षु ॥ **॥ चण्डी ॥** म
 तिर्गुर्गुणरक्तवीर्ज हस्त्यानिभुगपुनरेव चण्डी म
 ॥ हस्तिस्मरुदहनाचितलोकनायसा मेखियदहना
 जविनाशनीया ॥ **॥ धर्ममालको कोटो जपयाप ॥** म
 हीनी क्रियाहीन भक्तिहीन तथेव च ॥ जुलोप्यरी मया

0 cm.

5

10

15

20

25

धनसकलप्राप्त्योगपदसंज्ञा का प्रथम

देवीपरिपूर्णाद्वन्द्वमे ॥ अपराधसहस्राणिश्रीयतेनि
हर्षमया ॥ दासोहमितिमानन्वाक्षमस्तु परमेष्ठी ॥
तर्पण ॥ प्रेतप्रेतासनेत्यादि ॥ ॥ ऐकाने पादुकी ॥ श्री
अम्बे पादुकी ॥ ॥ मूलतस्तत्त्वानकी काया ॥ सकला
नकाया ॥ समयस्य ॥ कामतर्पणः ॥ ॥ रात्री वस
नविषा ॥ इति महाष्टमी पूजा ॥ ॥ अथ नवमी पू
जा ॥ ॥ आचमन ॥ अशादि ॥ वाक्य ॥ गोत्रास्तु मूल
नवमी भोगवत्पार्चनपूजानि निषेध ॥ कुलमार्तराड
भैरवायार्चनमः ॥ शुद्धनमः ॥ अष्टमी कुहुकार्थेष्ट

जाविधिरकती जाया ॥ धूपदीपनेवयजयस्तोत्रार्च
नके ॥ ॥ धनसुविपूजा ॥ स्नानयातके ॥ फटा ॥ चेत
सिद्धरति के स्थानतये ॥ ॥ पूजा ॥ कालिशवज्रेश्वरी लो
हदण्डायनमः ॥ ॥ मूलसद्वर्गनतने ॥ ॥ लोत्रा ॥ एवं
कुरुतोतीक्षाधारा सर्वसगुनियानि ॥ पलुपाशविना
शाय असी मूर्ति नमोस्तुते ॥ ॥ दुग्ध ॥ लाहानुती मि
के ॥ वलिष्टगुणाय ॥ लीजकिगोलनपियाववलिलयत
पा ॥ अंकुश ॥ मतविषा ॥ ॥ दुग्धार्तलीवनस्यस्य
धपित होय ॥

अथ दशम्याचार्यायुजा ॥ अथादिवाक्यगोशाम्
 तदशम्यावैकुण्ठादेवात्तानोमेत्यथकिर्त्तुष्वीम्
 स्याद्योनिमः ॥ पुष्पनमः ॥ अष्टम्याथोविधि
 पूर्वकनयुजायातावरुया ॥ वलिसाधुपदीयनेवश
 जवत्प्रोशत्तधुनेले ॥ ध्वनीलिवलिथय ॥ कलश
 यानलनदेवहायवदनालिहूरमोहनीसगोनआ
 लात्मानदेवयातध्व ॥ ध्वनीलिसकुलयातचित्ता
 नेविश ॥ ध्वनेधुनडावजजमानेयातवेकुलवृक्षया
 आदिसकल १

॥ यादेवीमधुकैटभेति ॥ कटसेमललसनया ॥ गम
 नयाया ॥ गमनचार्थलाभायध्यायविमयायच
 सत्रयक्षनिवासायपुनरागमनाय ॥ कटसिज
 मलाकटुलो ॥ ध्वनील ३ ॥ आदिदेवगरासर्वेकुजा
 मादायमेवच ॥ इष्टकामपदायपुनरागमनायच
 ॥ शत्रुकामनानकनसेयाले ॥ खड्गलवृक्षयमालसा
 लसेय ॥ मुमालसाखड्गदेवसकेतोदतो ॥ कटसे
 सेजोगुलाधुयावसमनकाय ॥ ध्वनदेवया ३

15

नेमराडलदयके किगडापुचलतयमतडाघाततये
 सकलस्वार्ततायकिगोलजोनावपार्थनायाय॥क्षमद्य
 सर्वमश्रानिनिपानदकरययाधर्माध्वाममोक्षायपुन
 रगमनायया॥देवशास्त्राङ्गप्रणामयाय॥॥कुम्भधा
 विनीआदिशक्तियान्तपुस्तकाया॥सर्वमंगलमंगल्येति
 श्रीसम्पत्ति॥॥तर्कसा॥त्रिचक्रकाया॥प्रेतप्रेता॥अ
 ष्टविंशति॥अधिनाशो॥जयतिर्कार्वयाया॥पलिध
 या॥॥दुग्गयाशिरकोकाया॥॥सूर्यसाक्षिथाया॥॥

10

5

गोत्रात्मन्महाहृमीमहानवमीविजयादशमीयुक्तार्थ
 पूरणीर्थकृतकर्मसाक्षिणे श्रीसूर्याय अर्धनमः॥पूर्य
 नमः॥॥वल्लिपूजा॥निम्नाल्पवासिभ्योनमः॥वालो
 स्वस्थानवालोभवन्त॥॥इति श्रीतारदीयेनवरात्र
 गपूजापद्धतिसप्तमः॥॥सर्वत्र॥॥विक्र
 म॥॥॥सालजेष्टपुल्ले पुनियदाभोमवारो
 शक्यादिपुष्पिलस्तीव्रः॥॥देवमूर्तिसहस्र
 हनीकृजापद्धतिगदेशभवाटालयाश्रीरुद्रमानसु

0 cm.

5

10

15

20

25

सिने नमः भूमिं देव हिमवतं पद्मसकलाग्रे नमः सुधा
मो न देव नमः जो न देव नमः जो न देव नमः जो न देव नमः

नामकनः आहावनादी नमः नमः ॥
भानाथावननः कुलेसनाथाय

॥ अथ चतुर्थी विधी विधीयेते ॥

नवरात्रकु थीस पूजा ॥ खड्ग या हने वली
पावते ॥ शंख अर्घ्य पात्र तये ॥ त्रिराच-
म्य ॥ न्यास जल पात्र अर्घ्य पात्र पूजा ॥ देव स्ना-
न ॥ चंदनादियज्ञो पवीतक पुष्प त्वयाये ॥ ॥
त्रिराचम्य ॥ सूयार्घ्यः ॥ अङ्गुल्यादि ॥ गोत्रना-
म अस्मत् महोदस म्यां खड्ग यात्रा ईष्टु देये

खड्ग गृहे भूत्र चतुर्थी दिवार्च रानी श्री लक्ष्म्यं
ह्रीं ह्रीं सः श्री लक्ष्मी नारायण भैरवाय अर्घ्य नमः
पुष्प नमः ॥ ॥ अखराड नारायण नारायण
धर्मनीत्यया धर्म स्तोत्र पद्योत कथन धन
कावक्षेय ॥ ॥ नवरात्र कलस वीसर्जन ॥ ह्रीं
अस्त्राय फट् ॥ संहार मुद्रा ॥ कलस वीसर्जन

नदेवष्ट हाये ॥ चेत-सिंह-संगंधौ-मोहनी
काये-नवरात्र-पुष्पहाये ॥ ॥ पिहावयाव-थका
ली-आदिपुं-नवरात्र-कल-मनहाये ॥ चेत-स्वाम
विये ॥ कनक-थका-लियात-वीये ॥ क-धन-मान
को-तर्पणा-दि-याये-मान ॥ बलि-थोये-मी-म
न ॥ भोजन-न-कारयेत ॥ इती-चतुर्थी-वीधि
समाप्तम् ॥ शुभ-मस्तु-सर्वदा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्री-गुरु-भक्त-विचरन्त-स्व-कु-ना
न-जो-ही-सर-न ॥ शुभ-मस्तु ॥



15

10

5

0 cm.

5

10

15

20

25